खनिज संसाधन

* ~~स्वतंत्र~~ नवीनतम खनिज नीति के अनुसार राज्य में 82 प्रकार के खनिज मिलते है। अतः राजस्थान को खनिजो का अजायबघर कहा जाता है।

Note → नागौरी उच्च भूमि क्षेत्र में खनिज सर्वाधिक मिलते है। अतः इस क्षेत्र को "खनिजो का अजायबघर" कहा जाता है।

* प्रमुख खनन नीतियाँ :→

1. प्रथम खनन नीति [1978] → (प्रथम औद्योगिक नीति)

* 'खनिजो की खोज' पर सर्वाधिक बल दिया गया।

* अप्रधान खनिजों के सर्वाधिक पट्टे S.C , S.T को उपलब्ध करवाये जाये।

2. द्वितीय खनन नीति [1991] →

* इस खनन नीति के तहत "पहले से जुड़े हुये लोगो को अधिक से अधिक प्राथमिकता दी जाए"।

3. तृतीय खनन नीति [1994] →

* वैज्ञानिक पद्धति से खनन, आधुनिक तकनीक का सर्वाधिक प्रयोग।

4. चतुर्थ खनन नीति [2011] →

* गैर कानुनी ढंग से होने वाले खनन पर रोक।

* खानों के आवंटन में होने वाले भ्रष्टाचार पर रोक।

सर्वाधिक सुचालक - चाँदी → धात्विक - अयस्क के रूप में प्राप्त (अशुद्ध)
गौण → अधात्विक - मूलरूप में

5 पंचम खनन नीति [2015] →

* इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण व दूरदराजलोके बेरोजगार युवाओं को अधिकाधिक रोजगार उपलब्ध करवाना है।

* प्रमुख खनिज *

खनिज संसाधनों को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया जाता है →

1 धात्विक खनिज :→

→
यह अधिकांश अयस्क (विद्युत के सुचालक) के रूप में प्राप्त होते है।

जैसे →

लोहा अयस्क,	टंगस्टन	कोबाल्ट
तांबा	सीसा-जस्ता	एल्युमीनियम
सोना	बेरीलियम	
चांदी	प्लैटिनम	

2. अधात्विक खनिज :→

* यह अधिकांशत: विद्युत के कुचालक होते है। यह मूल रूप से प्राप्त होते है।

जैसे →

अभ्रक	पन्ना	कोयला	जिप्सम
चूना पत्थर	हिरा	नमक	
ग्रेनाइट	तामड़ा	धीया पत्थर	
संगमरमर	खनिज तेल	मुलतानी मिट्टी	

अन्य

* अन्य उपभाग →

1. ईंधन खनिज →
जैसे →

कोयला
खनिज तेल
प्राकृतिक गैस

आणविक खनिज

2. उर्वरक खनिज →
जैसे →

रॉक फास्फेट, जिप्सम

3. बहुमूल्य खनिज →

जैसे → हीरा, तामड़ा, पन्ना, संगमरमर

* प्रमुख खनिज *

1. लौहा अयस्क

* इसे "आधुनिक सभ्यता की रीड" कहा जाता है।

* लौहांश की मात्रा के आधार पर 4 प्रकार का होता है →

1. हेमेटाइट
2. मेग्नेटाइट] राजस्थान
3. लिमोनाइट
4. सिडेराइट

* राज्य में हेमेटाइट व मेग्नेटाइट किस्म का लोहा प्राप्त होता है।

चाँदी + सीसा + जस्ता (संयुक्त रूप से प्राप्त होते है)

* राज्य में लोहे के सर्वाधिक जमाव व उत्पादन "जयपुर" में है।

उत्पादन क्षेत्र →

1. मौरीजा बानोल क्षेत्र — जयपुर

⇒ चिपलाटा, थोई, बागावास, भाटे की गली (खानों के नाम व जगह)

2. निमला रायसेला क्षेत्र — दौसा

⇒ राजगढ़, भानगढ़, रतनपुरा

3. डाबला सिंघाना क्षेत्र — झुंझुनूं

⇒ काली पहाड़ी, नाई की ढाबी, सिओरी

4. नाथरा की पाल थूर हुण्डेर क्षेत्र — उदयपुर

2. सीसा - जस्ता अयस्क (संयुक्त स्वरूप — गैलेना)

* सीसा + जस्ता संयुक्त रूप से प्राप्त होता है। जिस अयस्क को "गैलेना" कहा जाता है।

Note → सीसा - जस्ता विद्युत का अर्द्धचालक होता है।

* सीसे का उपयोग → कारतूस, बैटरी, टाइपराइटर, आदि।

* जस्ते का उपयोग → मीटर के पुर्जे बनाने में, लोहे के पालिश करने में।

* इस खनिज का सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर में होता है→

उत्पादन क्षेत्र →

1. जावर क्षेत्र – उदयपुर

जैसे ⇒ जावरमाला, मोचियामगरा, बरोड़मगरा।

2. रामपुरा आगुचा क्षेत्र – भीलवाड़ा

3. राजपुरा दरीबा क्षेत्र – राजसमंद

4. चौथ का बरवाड़ा – सवाई माधोपुर

3. चाँदी अयस्क

* बहुमूल्य खनिज उपयोग – आभूषण व बर्तन बनाने में
जिसका सर्वाधिक ~~सर्वाधिक~~ उपयोग आभूषण बनाने में।

* चांदी स्वतंत्र रूप से प्राप्त न होकर सीसे-जस्ते के साथ संयुक्त रूप से प्राप्त होती है।

* राज्य में चांदी का सर्वाधिक उत्पादन जावर (उदयपुर) में होता है।

उत्पादन क्षेत्र :→

1. जावर क्षेत्र – उदयपुर
2. रामपुरा क्षेत्र – भीलवाड़ा
3. राजपुरा क्षेत्र – राजसमंद
4. चौथ का बरवाड़ा – सवाई माधोपुर

4. सोना अयस्क

* बहुमूल्य खनिज जिसका उत्पादन राज्य में नगण्य है।

* राज्य का एकमात्र जिला बांसवाड़ा जहाँ सोने के उत्पादन होता है।

* उत्पादन क्षेत्र →

बांसवाड़ा → जगपुरा
आनन्दपुर भूकिया

5. मैगनीज अयस्क

* इसका उपयोग इस्पात निर्माण, रासायनिक उद्योग, काँच, उर्वरक आदि में किया जाता है।

* इस खनिज का सर्वाधिक उत्पादन बांसवाड़ा में होता है।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. बांसवाड़ा क्षेत्र → सागवा, लिलवानी (चोटीभाई), काला खूंटा, तलवाड़ा।

2. उदयपुर क्षेत्र → नेगड़िया, रामोरन, स्वरूपपुरा

* अन्य उत्पादन जिले →

चित्तौड़, प्रतापगढ़ →

6. अभ्रक अयस्क (माइका)

* माइका 3 प्रकार का होता है →

* अभ्रक के बुरादे से चादरे व ईंटे बनाई जाती है जिनका उपयोग विद्युत के उपकरणों में किया जाता है।

* अभ्रक से संबंधित उद्योगों को "माइकेनाइट" उद्योग कहा जाता है।

* राज्य में अभ्रक सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है अतः "अभ्रक नगरी" कहलाता है।

* प्रमुख उत्पादक क्षेत्र →

1. भीलवाड़ा → दांता, प्रतापपुरा, शाहपुरा, नट की खेड़ी छपरी, बनेड़ी आदि।

2. उदयपुर → चम्पागुढ़ा, सरवाड़गढ़, भगतपुरा।

3. अजमेर → चम्पानेरी, कालिन्जर, रतनपुरा, लसानी।

7. जिप्सम अयस्क

* जिप्सम का सर्वाधिक उपयोग सेम की समस्या के समाधान में किया जाता है। (ऊसर)

* अन्य उपयोग → POP प्लास्टर ऑफ पेरिस
  चीनी मिट्टी के बर्तन
  कागज बनाने में

* राज्य में जिप्सम के सर्वाधिक भण्डार व उत्पादन - नागौर

उत्पादन क्षेत्र →

1. नागौर → गोठ मांगलोद, खैरात, भदवासी।

2. बीकानेर → जामसर, हरकसर, पुंगल

* अन्य उत्पादक जिले → जोधपुर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर।

8. टंगस्टन अयस्क

* टंगस्टन का उपयोग विद्युत बल्ब, एक्स-रे, पिक्चर ट्यूब, स्टील को मजबूत करने में।

* राज्य में इस खनिज का सर्वाधिक उत्पादन डेगाना-भाकरी क्षेत्र - नागौर में होता है।

* डेगाना में स्थित यह टंगस्टन खनिज परियोजना भारत की सबसे बड़ी "टंगस्टन खनिज परियोजना" है।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. नागौर → डेगाना, भाकरी

2. सिरोही → वाल्दा, आबू, रेवदर।

9. तामड़ा अयस्क

* बहुमूल्य खनिज जिसका सर्वाधिक उत्पादन टौंक में होता है।

* यह लाल रंग का रत्न अतः "रक्तमणि" कहलाता है जिसका सर्वाधिक उपयोग आभूषणों में होता है।

* उत्पादन क्षेत्र → टौंक → राजमहल, कल्याणपुरा, जनकपुरा, कुशालपुर

अजमेर → सरवाड़, बरबारी।

भीलवाड़ा → कमलपुरा, दांपिया, बालियाखेड़ी

10 पन्ना अयस्क

* यह हरे रंग का रत्न होता है अतः यह "हरी अग्नि" कहलाता है।

* इस खनिज का सर्वाधिक उपयोग आभूषण बनाने मे किया जा सकता है।

* यह खनिज राज्य मे सर्वप्रथम 1943 में कालागुमान क्षेत्र (उदयपुर) की खानों मैं मिला था।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. उदयपुर → कालागुमान, तिखी, गोगुन्दा।

2. अजमेर → राजगढ़, बुबानी।

11. ग्रेनाइट अयस्क

* ग्रेनाइट आग्नेय चट्टानों से प्राप्त होने वाला कठोर खनिज है।

* ग्रेनाइट का सर्वाधिक उत्पादन जालौर मे होता है। अतः जालौर को "ग्रेनाइट सिटी" कहलाता है।

* प्रमुख प्रकार →

1. पीला ग्रेनाइट → पीथला गॉंव - जैसलमेर

2. गुलाबी ग्रेनाइट → जालौर, इंद्राणा - बाड़मेर

3. गुलाबी - काला ग्रेनाइट → अजमेर

4. हरा ग्रेनाइट → डूंगरपुर

5. काला ग्रेनाइट → काला डेरा (जयपुर)

12. संगमरमर अयस्क

* बहुमूल्य कीमती पत्थर जिसके उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है।

vImm
* राज्य में संगमरमर का सर्वाधिक उत्पादन राजसमंद जबकि सर्वोच्च किस्म का संगमरमर मकराणा (नागौर) में उत्पादित होता है।

* राज्य में संगमरमर की प्रथम खान R.K मार्बल नाम से राजसमंद में है।

* एशिया की सबसे बड़ी संगमरमर की मंडी किशनगढ़ (अजमेर) में स्थित है।

* संगमरमर के प्रमुख प्रकार →

1. सफेद संगमरमर → मकराणा - नागौर

2. हल्का हरा संगमरमर → डूंगरपुर

3. गुलाबी संगमरमर → भरतपुर, जालौर

4. लाल संगमरमर → धौलपुर

5 लाल-पीला संगमरमर → जैसलमेर

6. बादामी संगमरमर → जोधपुर

7. लहरदार संगमरमर → राजसमंद

8 सतरंगी संगमरमर → खादरा गाँव - पाली

9. काला संगमरमर → भैंसलाना - जयपुर

10 महरबन → करौली

11 हरा संगमरमर → उदयपुर

13 रॉक फॉस्फेट अयस्क

* यह एक महत्वपूर्ण उर्वरक खनिज है। जिसके उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है।

* इस खनिज का सर्वाधिक उत्पादन झामरकोटड़ा - उदयपुर में होता है।

* उत्पादन क्षेत्र →

1 उदयपुर → झामरकोटड़ा, नीमचमाता, बैलागढ़, भींडर

2. जैसलमेर → बिरमानिया, लाठी सीरिज क्षेत्र

अन्य → पाली, बाड़मेर व जोधपुर ।

कोयला – पश्चिमी राजस्थान में सर्वाधिक

15. कोयला अयस्क

* ऊर्जा का परम्परागत स्रोत, जिसके सर्वाधिक जमाव व उत्पादन बाड़मेर मे है।
* उपयोग → तापविद्युत।

* उत्पादन क्षेत्र →

बाड़मेर → कपुरडी, जालिपा, गीरल।

बीकानेर → पलाना, गुढ़ा, बरसिंगसर।

नागौर → मेड़ता

* कार्बन की मात्रा के आधार पर कोयला 4 प्रकार का होता है →

1. एन्थ्रासाईट
2. लिग्नाईट
3. बिटुमिनस
4. पीट

16. खनिज तेल व प्राकृतिक गैस

* खनिज तेल अवसादी चट्टानों से प्राप्त होता है।

* ऊर्जा के परम्परागत ऊर्जा स्रोत जिनका सर्वाधिक जमाव व उत्पादन पश्चिमी राजस्थान मे है।

* उत्पादन क्षेत्र →

जिला	खनिज तेल	प्राकृतिक गैस
बाड़मेर	मग्गा की ढाणी हाथी ढाणी वाघतुकबास सिणधारी मग्ला I मग्ला II विजया भाग्यम ऐश्वर्या कामेश्वरी कौसलु सरस्वती रामेश्वरी	×
जैसलमेर	साधेवाला तनोट मनिहारी टिब्बा	डंडेवाला कमलीताल तनोट मनिहारी टिब्बा घोटारु – हीलियम गैस
बीकानेर	बाघेवाला तुवरी वाला	×

अन्य खनिज

खनिज

खनिज	उत्पादक जिले
बेरेलियम	उदयपुर, भीलवाड़ा, राजसमंद
फेल्सपार	अजमेर, पाली, भीलवाड़ा
मुल्तानी मिट्टी	बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर
डोलोमाइट	जयपुर, सीकर
चुना पत्थर	जोधपुर, पाली, चित्तौड़
नमक	नागौर, जयपुर, अजमेर
बलुआ पत्थर	जोधपुर, पाली, बीकानेर
घीया पत्थर	उदयपुर, चित्तौड़, प्रतापगढ़
कोबाल्ट	झुंझुनू, नागौर
बॉक्साइट	कोटा, सवाई माधोपुर